आशा श्रीनिवासन

# संगीत में संस्कृतियों का मिलाप

फ्रांसिस सी. असीसी

साभार: आशा श्रीनिवासन

*बाएं से: जोन टावर, आशा श्रीनिवासन और बीएमआई (ब्रॉडकास्ट म्यूज़िक, इनकॉरपोरेटेड) क्लासिकल के असिस्टेंट वाइस प्रेसिडेंट राल्फ़ जैक्सन।*

भारतीय मूल की अमेरिकी संगीतज्ञ आशा श्रीनिवासन यह साबित कर रही हैं कि अमेरिका में शास्त्रीय संगीतकार के रूप में सफल होने के लिए यूरोपियन होना और दो सदी पहले स्वर्ग सिधार चुकना अनिवार्य शर्तें नहीं हैं।

लोगन, यूटा में जन्मी और 9 वर्ष की होने तक भारत में पली-बढ़ी आशा हाल ही में अमेरिका के शीर्ष युवा संगीतकारों की कतार में शामिल हो गई हैं।

क्लैरिनेट, वायलिन, वॉयला और सेलो के सुरों से सजी उनकी संगीत रचना ''बाय द रिवर नियर सावत्ती'' 2 जून को न्यूयॉर्क सिटी के चेल्सी आर्ट म्यूज़ियम में आयोजित संगीत समारोह 'नोटेबल विमेन: ए सेलिब्रेशन ऑफ़ विमेन कम्पोज़र्स' में पहली बार जनसमूह के समक्ष प्रस्तुत की गई। 74 युवा संगीतकारों के साथ स्पर्धा में जीतने पर न्यूयॉर्क सिटी के सेंट ल्यूक्स चैम्बर एन्सैम्बल के लिए आशा को यह रचना तैयार करने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई थी।

एन्सैम्बल की संगीतकार और समारोह की आयोजक 68 वर्षीया जोन टावर कहती हैं, ''हमने उन्हें इसलिए चुना कि हमें उनकी आवाज़ में कुछ खास बात नज़र आई। मुझे उनकी आवाज़ में वैयक्तिक खासियत दिखी।'' जोन न्यूयॉर्क के बार्ड कॉलेज में संगीत की प्रोफ़ेसर हैं।

आशा कहती हैं कि बहुमुखी चेतनाओं को प्रतिबिम्बित करने वाले उनके आंतरिक संघर्ष की जड़ें उनकी संकर पृष्ठभूमि और संगीत दोनों में ही गहरी धंसी हैं। वह बताती हैं कि ''बाय द रिवर'' की प्रेरणा उन्हें कर्नाटक शैली के राग ''शुभपन्तुवरली'' के साथ ही जर्मन लेखक हर्मन हैस की विख्यात कृति सिद्धार्थ से मिली। ''मैं जब भी यह राग सुनती, मेरे मन में गहरी वेदना का भाव जागता। एक गहरी पीड़ा या दार्शनिक भाव से संसार से थक चुके होने की याद आती। और मेरे मन में हमेशा ही नदी के तट पर बैठे, नदी को निहारते और विस्मरण की कामना करते सिद्धार्थ की छवि उभरती।''

आशा ने सिद्धार्थ हाईस्कूल के जमाने में पढ़ी थी और तभी से उनके मानस पर उसका गहरा प्रभाव था। ''मैंने अपने जीवन के कई दौरों में इसे पढ़ा है और हर बार इसका नया, अधिक समृद्ध अर्थ जाना है।''

आशा की इससे पहले की रचनाओं में भी कई तरह के प्रभावों का मेल दिखता है। ''कल्पित'' में कर्नाटक संगीत की ध्वनियां और स्वर एक सरल लेकिन बांधे रखने वाली रचना को जन्म देते हैं। शास्त्रीय गिटारवादक माइकल डरेक कहते हैं कि इस रचना को आशा के एक व्यक्ति और एक संगीतकार के मेल के रूप में देखा जा सकता है: बचपन भारत में, वयस्क होने का दौर अमेरिका में; बचपन में कर्नाटक शैली का गायन, वयस्क के रूप में पश्चिमी शास्त्रीय शैली। दूसरी ओर उनकी रचना ''फालिंग: संसारम'' खुद आशा के ही शब्दों में ''जीवन के दुख और सुख से मोह और विमोह के विपरीत ध्रुवों के बीच झूलती है।''

आशा स्पष्ट करती हैं कि वह जितनी अमेरिकी हैं, उतनी ही भारतीय भी हैं। उनका संगीत प्रशिक्षण मुख्यत: पश्चिमी शैली में रहा है लेकिन उनके संगीत सम्बन्धी चिंतन और विचारों पर भारतीय संगीत की गहरी छाप है। बचपन में उन्होंने यही संगीत सीखा और घर में अब भी भारतीय शास्त्रीय संगीत सुना जाता है। आशा के माता-पिता कामकाजी वीज़ा खत्म होने पर भारत लौट आए और इस तरह उनका बचपन भारत में बीता। बाद में पिता को पुरानी नौकरी पर वापस बुला लिया गया तो उनका परिवार अमेरिका चला आया।

यह पूछने पर कि वह कम्प्यूटर-जनित पश्चिमी शास्त्रीय रचनाओं में कर्नाटक संगीत को कैसे शामिल कर पाती हैं, आशा बताती हैं कि कर्नाटक शैली का प्रभाव उनके संगीत के ध्वनि पक्ष पर प्रबल है- खासतौर पर बांसुरी में। ''आमतौर पर मैं लय को गाकर संगीत रचना करती हूं और मुझे लगता है कि कर्नाटक संगीत के मेरे सीमित प्रशिक्षण का यह प्रबल योगदान है।'' वह मानती हैं कि उनकी संगीत रचनाओं पर और प्रभाव भी हो सकते हैं जो फिलहाल इतने स्पष्ट नहीं हैं। ''मैं हिंदी और तमिल फिल्मों के गाने और अन्य कई तरह का संगीत भी सुनती हूं, इसलिए इस बात की पूरी संभावना है कि इन शैलियों का प्रभाव भी पड़ा होगा।''

बाल्टिमोर के गूशर कॉलेज में स्नातक अध्ययन के दौरान उन्होंने पहले कम्प्यूटर जनित संगीत पढ़ा और उन्हें खुद और तुरंत स्वरों के सृजन का यह तरीका बहुत पसंद आया, ''ध्वनिक संगीत और कम्प्यूटर संगीत में यही अंतर है। कम्प्यूटर संगीत रचना तैयार करते हुए संगीतकार ध्वनि के साथ काम करता है। यह कुछ-कुछ मूर्ति गढ़ने जैसा है जहां आप श्रव्य सामग्री का उपयोग करके एक निश्चित ध्वनि रचना रचते हैं।''

फिलहाल कॉलेज पार्क में यूनिवर्सिटी ऑफ़ मेरीलैंड से संगीत में डॉक्टरेट अध्ययन कर रही आशा बाल्टिमोर शहर के अंदरुनी इलाकों के स्कूली बच्चों को आधारभूत संगीत सिखाने के एक कार्यक्रम से जुड़ी हैं। इन गर्मियों में वह ''इंट्रोडक्शन टु म्यूज़िक टेक्नोलॉजी'' का पाठ्यक्रम भी पढ़ाएंगी। इसके अलावा वह अपने शोध प्रबंध के लिए वाद्यवृन्द संगीत रचना का एक हिस्सा तैयार कर रही हैं।

---

***फ्रांसिस सी. असीसी*** *कैलिफोर्निया के पोर्टल* indolink.com *के स्तंभकार हैं।*

*कृपया इस लेख के बारे में अपनी राय* editorspan@state.gov *पर भेजें।*

© किपाटिय/गेट्टी इमेजेज